Resonance® Educating for better tomorrow

RBSE-XII[TH] 2021-22

DATE: 08-04-2022

Questions Paper

SERIES: SS/01 | CODE : 001/1/4 | SET-1

SUBJECT : HINDI (COMPULSORY)

विषय–हिंदी (अनिवार्य)

TIME ALLOWED : 2 HOURS 45 MINUTES **MAXIMUM MARKS : 80**

General Instructions:

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः–

(i) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।

(ii) सभी प्रश्न करने अनिवार्य है।

(iii) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर पुस्तिका में ही लिखें।

(iv) जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड है उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

(v) प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें

खण्ड – अ

बहुविकल्पी प्रश्न–

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए: **12 × 1 = 12**

जो समझता है कि यह दूसरों का उपकार कर रहा है, वह अबोध है, जो समझता है कि दूसरे उपकार कर रहे है. यह बुद्धिहीन है कौन किसका उपकार करता है – कौन किसका अपकार कर रहा है? मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है, अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास विधाता की योजना के अनुसार। किसी को उससे सुख मिल जाये, बहुत अच्छी बात है; नहीं मिल सका कोई बात नहीं, परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिये। सुख पहुँचाने का अभिमान तो नितरांत गलत है। दुःख और सुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है, दुःखी वह है जिसका मन परवश है। जिसका मन अपने वश में नहीं है वहीं दूसरे के मन का छंदावर्त्तन करता है। अपने को छिपाने के लिये मिथ्या आडम्बर रचता है, दूसरों को फंसाने के लिए जाल बिछाता है।

(1) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है **1**

(अ) सुख और दुःख (ब) आडम्बर (स) अबोध (द) बुद्धिहीन

उत्तर– (अ) सुख और दुःख

(2) सुखी कौन है ? **1**

(अ) जिसका मन वश में है। (ब) जो मिथ्याडम्बर रचता है।

(स) जिसका मन परवश है। (द) जो अभिमानी है।

उत्तर– (अ) जिसका मन वश में है।

(3) मनुष्य किसलिए जी रहा है? **1**

(अ) अपनी इच्छा से (ब) विधाता की योजना के अनुसार

(स) अभिमान करने के लिये (द) जाल बिछाने के लिये

उत्तर– (ब) विधाता की योजना के अनुसार

(4) मिथ्या आडम्बर कौन रचता है? **1**

(अ) जो जीना चाहता है। (ब) जो मन के वश में नहीं है।

(स) जिसका मन अपने वश में नहीं है। (द) जो बुद्धिहीन है।

उत्तर– (स) जिसका मन अपने वश में नहीं है।

(5) अबोध कौन है? **1**

(अ) जो समझता है कि वह दूसरों पर उपकार कर रहा है।

(ब) अभिमानी मनुष्य

(स) जो बुद्धिहीन है।

(द) मिथ्याचारी मनुष्य

उत्तर– (अ) जो समझता है कि वह दूसरों पर उपकार कर रहा है।

(6) सुख और दुःख क्या हैं? **1**

(अ) मिथ्या आडम्बर (ब) अभिमान (स) मन के विकल्प (द) ईश्वर की योजना

उत्तर– (स) मन के विकल्प

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर–पुस्तिका में लिखिए :

रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिलाते थे।
बड़े–बड़े मोती से आँसू जयमाला पहनाते थे ।
मैं रोई, माँ काम छोड़कर आई, मुझको उठा लिया।
झाड़–पोंछ कर चूम–चूम कर गीले गालों को सुखा दिया।।
दादा ने चंदा दिखलाया नैन नीर–युत दमक उठे।
धुली हुई मुस्कान देखकर सबके चेहरे चमक उठे ।।

वह सुख का साम्राज्य छोड़कर में मतवाली बड़ी हुई।
लुटी हुई कुछ ठगी हुई–सी दौड़ द्वार पर खड़ी हुई।।

(7) रोना और मचल जाना क्या दिलाता था ? **1**

(अ) आनन्द (ब) भय (स) दुःख (द) क्रोध

उत्तर– (अ) आनन्द

(8) जयमाला किसकी बनी होती थी ? **1**

(अ) फूलों की (ब) मोतियों की (स) आँसुओं की (द) आनंद की

उत्तर– (ब) मोतियों की

(9) सबके चेहरे क्यों चमक उठे ? **1**

(अ) मुस्कान देखकर (ब) आँसू देखकर (स) रोने से (द) चंदा देखकर

उत्तर– (अ) मुस्कान देखकर

(10) इस पद्यांश का शीर्षक क्या हो सकता है ? **1**

(अ) जीवन (ब) दादा (स) बचपन (द) जयमाला

उत्तर– (स) बचपन

(11) दादा ने कवयित्री को क्या दिखलाया? **1**

(अ) चंदा (ब) मोती (स) साम्राज्य (द) नैन

उत्तर– (अ) चंदा

(12) 'नैन नीर–युत' का क्या अर्थ है? **1**

(अ) सुख (ब) आँसू (स) पानी (द) आँसू भरी आँखें

उत्तर– (द) आँसू भरी आँखें

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए: 6

(1) _____मौखिक अभिव्यक्ति का माध्यम है। **1**

(2) भाषा का लिखित रूप ही_____कहलाता है। **1**

(3) ''घोड़ा सवारी के काम आता है।'' वाक्य में _____शब्द शक्ति है। **1**

(4) लक्षणों पर आधारित अर्थ का बोध कराने वाली _____शब्द शक्ति होती है। **1**

(5) 'चारू–चन्द्र की चंचल किरणें' उक्त काव्य–पंक्ति में _____ वर्ण की आवृत्ति के कारण _____अलंकार है। **1**

(6) जहाँ शब्द की आवृत्ति हो किन्तु अर्थ भिन्न हो वहाँ _____अलंकार होता है। **1**

उत्तर– (1) बोलना **(2)** लिखित भाषा **(3)** अभिधा **(4)** लक्षणा **(5)** 'च' अनुप्रास **(6)** यमक

3. निम्नलिखित अतिलघुत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए: 11

(1) निम्न पारिभाषिक शब्दों के अर्थ लिखिए **½ × 2 = 1**

(अ) Notice (ब) Circular

उत्तर– (अ) सूचना (ब) परिपत्र

(2) शब्द कोश क्या होता है? **1**

उत्तर– उसे शब्द कोश कहते है। जिसमें शब्दों को यो ही अथवा अर्थ सहित क्रम विशेष में सुनियोजित कर दिया जाता है।

(3) इंटरनेट पत्रकारिता से क्या आशय है? **1**

उत्तर– इंटरनेट पर समाचारों का प्रकाशन या आदान–प्रदान इंटरनेट पत्रकारिता कहलाता है।
इंटरनेट पत्रकारिता दो रूपों में होती है।

- ई–मेल द्वारा भेजे जाने वाले समाचार जो रिपोर्टर के लिए होता है।
- दूसरा जन सामान्य के लिए किसी वेब पर भाने जाने वाले समाचार

(4) 'भक्तिन' का वास्तविक नाम क्या था? **1**

उत्तर– लक्ष्मी

(5) यशोधर बाबू अपनी घरवाली के आधुनिकाओं सा आचरण करने पर क्या कहकर उसका मजाक है? **1**

उत्तर– अधिक फैशन में रहने के कारण यशोधर बाबू उन्हें 'शानयल बुढ़िया' 'चटाई का लहँगा' या 'बूढ़ी मुँह मुँहासे, लोग करे तमाशे' कहकर उनका मजाक उड़ाते हैं ।

(6) ''सिल्वर वेडिंग' से इस कहानी का क्या आशय है? **1**

उत्तर– सिल्वर वेडिंग' कहानी की रचना मनोहर श्याम जोशी ने की है। इस पाठ का आशय है कि पीढ़ी के अंतराल का मार्मिक चित्रण क्योंकि आधुनिकता के दौर में, यशोधर बाबू परंपरागत मूल्यों को हर हाल में जीवित रखना चाहते हैं। उनका उसूलपसंद होना दफ्तर एवम घर के लोगों के लिए सरदर्द बन गया था ।

(7) 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइये कि लेखक के पिता ने उसकी पढ़ाई क्यों छुड़वा दी? **1**

उत्तर– लेखक के पिता ने पढ़ाई इसलिए छुडवाई जिससे कि घर की सारी जिम्मेदारी बच्चा संभाले और खुद ऐशो आराम से रह सके और गाँव में कनखियाँ मारता रहे।

(8) कविता से लगाव के बाद लेखक को अकेले रहना क्यों अच्छा लगने लगा? **1**

उत्तर– पहले की अपेक्षा अब उसे अकेला रहना अच्छा लगने लगा। इस स्थिति में वह ऊँची आवाज में कविता गा सकता था। वह अभिनय भी कर सकता था। वह थुई–थुई करके नाच भी सकता था। इस तरह अब उसे अकेलापन आनंद देने लगा था।

(9) कवि रघुवीर सहाय की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए। **1**

उत्तर– सीढ़ियों पर धूपन हँसो–हँसो जल्दी हँसो।

(10) महादेवी वर्मा का जन्म कब और कहाँ हुआ था? **1**

उत्तर– 1907, फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश)।

(11) स्कूल में लेखक का ध्यान पढ़ाई में कब लगने लगा? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए। **1**

उत्तर– स्कूल में लेखक का ध्यान तब लगने लगा जब श्री सौदंलगेकर मराठी भाषा पढाने आते और कविताओं को गा–गाकर बच्चों को सुनाते, कभी अभिनय भी करते जिससे बच्चों का ध्यान पढ़ने में लगता।

खण्ड – ब

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 शब्दों में दीजिए **18**

4. मुद्रित माध्यम में लेखन के लिये किन बातों का ध्यान रखना चाहिए? **2**

उत्तर– मुद्रित माध्यम करते समय निम्न बातों का ध्यान होना आवश्यक हैं
(1) इसकी भाषा आसान होनी चाहिए, जिससे की साक्षर से विद्वान तक मूलभाव समझ सके।
(2) शब्दों की बनावट अच्छी एवं सुस्पष्ट होनी चाहिए।

5. पत्रकारीय लेखन पर टिप्पणी लिखिये। **2**

उत्तर– पत्रकारीय लेखन लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है यह देश विदेश की समस्त गतिविधियों एवं घटनाक्रम की जानकारी देता है, जिससे समाज में जागरूकता आती है। अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शको और श्रोताओ तक सूचना पहुँचाने के लिए लेखन करता है, उसे पत्रकारी लेखन कहते है।

6. अध्यापक और छात्र के बीच गृहकार्य करने को लेकर पाँच वाक्य लिखिये। **2**

उत्तर– (1) आपने गृह कार्य कर लिया।
(2) हाँ सर मैने गृह कार्य पूर्ण कर लिया है।
(3) बच्चों गृहकार्य करते समय शब्द शुद्धि व वाक्य शुद्धि पर विशेष ध्यान देना होता है
(4) सभी बच्चों को गृह कार्य समय पर जॉच कराना चाहिए
(5) गृहकार्य करने से लेखन क्षमता बढ़ती है।

7. 'बात सीधी थी पर' कविता की मूल संवेदना क्या है? **2**

उत्तर– "बात सीधी थी पर" कविता की मूल संवेदना पर यह है कि हमें अपने कथ्य को आसान से आसान भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए। भाषा की क्लिष्टता कभी-कभी बदनामी का कारण बनती है।

8. ''पतंगों के साथ–साथ वे भी उड़ रहे हैं'' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए। **2**

उत्तर– पतंगों के साथ –साथ वे भी उड़ रहें है– पंक्ति का आशय यह है, क्योंकि जिस प्रकार पतंग आसमान की ओर बढ़ती है, उसी प्रकार बच्चे भी अपनी बढ़ती उम्र के साथ–साथ आकांक्षाओ की ऊँचाइयों को छूने की ओर अग्रसर होते रहते है।

9. शिरीष को कालजयी अवधूत मानने के पीछे लेखक ने क्या तर्क दिये हैं? **2**

उत्तर– क्योकि शिरीष प्रत्येक मौसम में चाहे वह बसंत का आगमन हो या जेठ की उमस एवं लू भरा महीना तब भी जीवन की अजेयता का मंत्र फूकता रहता है।

10. जैनेन्द्र जी के अनुसार 'पर्चेजिंग पावर' क्या है ? ''बाजार दर्शन पाठ के आधार पर समझाइए। **2**

उत्तर– लेखक के अनुसार 'पर्चेजिंग पावर' का मतलब पैसों का अनावश्यक खर्च करना और दिखावटी या बनावटी जीवन–शैली पर जीवन न्योछावर करना।

11. यशोधर बाबू ऑफिस से घर लेट क्यों पहुँचते थे? **2**

उत्तर– यशोधर बाबू घर इसलिए लेट पहुँचते क्योंकि उनकी घड़ी एक तो गलत समय बताती थी और वह पाँच बजे बाद अपने जूनियरों से मनोरंजक बातें कर दिन भर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करते थे।

12. दत्ता जी राव ने लेखक की मदद किस प्रकार की ? 'जूझ' कहानी के आधार पर समझाइए । **2**

उत्तर– दत्ता जी राव ने लेखक के पिता को समझाया कि वह बच्चे को स्कूल भेजे। उसके लिए पुस्तकों की व्यवस्था भी की और कुछ समय फीस भी भरी। दत्ता जी राव ही उसे अंधकार से प्रकाश की ओर लेकर आए।

खण्ड – स

निम्नलिखित निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए:

13. ''कैमरे में बंद अपाहिज'' कविता में प्रश्नकर्ता का क्या उद्देश्य रहा है, उसके स्थान पर यदि आप होते तो किस प्रकार से लेते? **3**

उत्तर– कार्यक्रम–संचालक व निर्माता का एक ही उद्देश्य होता है–अपने कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाना ताकि वह धन व प्रसिद्धि प्राप्त कर सके। इस उपलब्धि के लिए उसे चाहे कोई भी तरीका क्यों न अपनाना पड़े, वह अपनाता है। कविता के आधार पर यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक–दोनों एक साथ रोने लगेंगे तो इससे सहानुभूति बटोरने का संचालक का उद्देश्य पूरा हो जाता है। समाज उसे अपना हितैषी समझने लगता है तथा इससे उसे धन व यश मिलता है।

अथवा

'उषा' कविता के आधार पर बताइये कि कवि ने किन उपमानों का प्रयोग कर कविता को गतिशील इस आधार पर अन्य किन उपमानों का प्रयोग किया जा सकता है?

उत्तर– कवि के नीले शंख, राख से लीपा हुआ गीला चौका, सिल, स्लेट, नीला जल और गोरी युवती की मखमली देह आदि उपमानों को देखकर यह कहा जा सकता है कि उषा कविता गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है। इन्हीं उपमानों के माध्यम से कवि ने सूर्योदय का गतिशील वर्णन किया है। ये उपमान भी कविता को गति प्रदान करते हैं।

14. 'भगत जी' का आचार समाज शांति और समता की स्थापना किस प्रकार सहायक हो सकता है? **3**

उत्तर– बाजार में भगत जी के व्यक्तित्व का यह सशक्त पहलू उभरकर आता है कि उनका अपने मन पर पूर्ण नियंत्रण है। वे चौक–बाजार में आँखें खोलकर चलते हैं। बाजार की चकाचौंध उन्हें भौचक्का नहीं करती। उनका मन भरा हुआ होता है, अतः बाजार का जादू उन्हें बाँध नहीं पाता। उनका मन अनावश्यक वस्तुओं के लिए विद्रोह नहीं करता। उनकी जरूरत निश्चित है। उन्हें जीरा व काला नमक खरीदना होता है। वे केवल पंसारी की दुकान पर रुककर अपना सामान खरीदते हैं। ऐसे व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकते हैं क्योंकि इनकी जीवनचर्या संतुलित होती है।

अथवा

ढोलक की थाप मृत गाँव में किस प्रकार संजीवनी भरती थी? पठित कहानी 'पहलवान की ढोलक' के आधार पर लिखिए।

15. ''सिल्वर वैडिंग'' कहानी में यशोधर बाबू और उनकी पत्नी के बीच वैचारिक अतर में पीढ़ी के बीच का वैचारिक अंतर दिखाई देता है। उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए। **3**

उत्तर– यशोधर बाबू की पत्नी समय को अच्छी तरह पहचानती हैं। वह जानती है कि बच्चों की सहानुभूति तभी प्राप्त की जा सकेगी जब बच्चों की सोच के अनुसार चला जाए। व्यवहार भी यही कहता है। दूसरे उसके व्यक्तित्व के विकास पर किसी व्यक्ति विशेष या वाद का प्रभाव नहीं है। तीसरे, संयुक्त परिवार के साथ उसका अनुभव सुखद नहीं रहा। उसकी इच्छाएँ अतृप्त रही। उसके अनुसार, "मुझे आचार–व्यवहार के ऐसे बंधनों में रखा गया मानो मैं जवान औरत नहीं, बुढ़िया थी।" अब वह बेटी के कहने के हिसाब से कपड़े पहनती है। वह बेटों के मामले में भी दखल नहीं देती।

दूसरी तरफ, यशोधर बाबू स्वयं को बदल नहीं पाते। वे सदैव किसी–न–किसी उलझन के शिकार हैं। वे सिद्धांतवादी हैं। इस कारण वे परिवार के सदस्यों से तालमेल नहीं बिठा पाते। उन पर किशनदा का प्रभाव है जो परंपरा को ढोते हुए अंत में फटेहाल मरे। वे संयुक्त परिवार, भारतीय परंपराओं को बनाए रखना चाहते हैं, परंतु परिवार उन्हें निरर्थक मानता है। यशोधर बाबू पार्टीबाजी, फैशन, अच्छे मकान में रहना आदि को पसंद नहीं करते। वे आधुनिक भौतिक वस्तुओं को बंधन मानते हैं। फलतः वे अलग–थलग हो जाते हैं। अंत में, उन्हें परिस्थितियों से समझौता करना पड़ता है।

अथवा

एक विद्यार्थी के जीवन में गुरु का क्या महत्त्व होता है? 'जूझ' कहानी के आधार पर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– जूझ' कहानी में दस्ता जी राव देसाई की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। वे गाँव के जमीदार है तथा नेकदिल व उदार हैं। बच्चों व महिलाओं पर उनका विशेष स्नेह है। वे हरेक की सहायता करते हैं। लेखक व उसकी माँ ने उन्हें अपनी पीड़ा बताई तो वे पिघल गए तथा निर्णय लिया कि वे लेखक के दादा को खरीखोटी सुनाकर सीधे रास्ते पर लाएँगे। वे साम–दाम–दंड–भेद किसी भी तरीके से अपनी बात मनवाना चाहते के उन्होंने दादा के आने पर हालचाल पूछा तथा बच्चे की पढाई के सबंध में बात खुलने पर उसे खूब फटकार लगाई। उनकी डाँट से दादा की विधि, बैठ गई तथा उसने आनंद की पढाई के लिए सहमति दे दी।

16. हरिवंश राय बच्चन का कवि परिचय लिखिए। **3**

उत्तर– जन्म – 1907 इलाहाबाद, शिक्षा एम.ए.पी.एच.डी।

रचना – मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश।

अथवा

धर्मवीर भारती का लेखक परिचय लिखिए।

उत्तर– जन्म – 1926 इलाहाबाद, (उत्तर प्रदेश)।
प्रमुख रचना – कनुप्रिया, ठंडा लोहा, बन्द गली का आखिरी मकान।

खण्ड द

निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: **2 + 4 = 6**

'जिंदगी में जो कुछ है, जो भी है
सहर्ष स्वीकारा है;
इसलिये कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है।
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सब
यह विचार–वैभव सब
दृढ़ता यह, भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है
इसलिये कि पल–पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है

अथवा

संवेदन तुम्हारा है।
दीपावली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखडे पै इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दिये
आँगन में ठुनक रहा है जिदयाया है
बालक तो हुई चाँद पै ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आइने में चाँद उतर आया है।

उत्तर– **प्रसंग** – प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग–2 में संकलित कविता 'सहर्ष स्वीकारा है' से उद्धृत है। इसके रचयिता गजानन माधव 'मुक्तिबोध' हैं। इस कविता में कवि ने जीवन में दुख–सुख, संघर्ष–अवसाद, उठा–पटक को सम्यक भाव से अंगीकार करने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या –कवि कहता है कि मेरी जिंदगी में जो कुछ है, जैसा भी है, उसे मैं खुशी से स्वीकार करता हूँ। इसलिए मेरा जो कुछ भी है, वह उसको (माँ या प्रिया) अच्छा लगता है। मेरी स्वाभिमानयुक्त गरीबी, जीवन के गंभीर अनुभव, विचारों का वैभव, व्यक्तित्व की दृढ़ता, मन में बहती भावनाओं की नदी–ये सब मौलिक हैं तथा नए हैं। इनकी मौलिकता का कारण यह है कि मेरे जीवन में हर क्षण जो कुछ घटता है, जो कुछ जाग्रत है, उपलब्धि है, वह सब कुछ तुम्हारी प्रेरणा से हुआ है।

विशेष–

(i) कवि अपनी हर उपलब्धि का श्रेय उसको (माँ या प्रिया) देता है।
(ii) संबोधन शैली है।
(iii) 'मौलिक है' की आवृत्ति प्रभावी बन पड़ी है।
(iv) 'विचार–वैभव' और 'भीतर की सरिता' में रूपक अलंकार तथा 'पल–पल' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(v) 'सहर्ष स्वीकारा', 'गरबीली गरीबी', 'विचार–वैभव' में अनुप्रास अलंकार की छटा है।
(vi) खड़ी बोली है।
(vii) काव्य की रचना मुक्तक छंद में है, जिसमें 'गरबीली', 'गंभीर' आदि विशेषणों का सुंदर प्रयोग है।

18. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: **2 + 4 = 6**

भक्तिन और मेरे बीच में सेवक स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है। क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया जो स्वामी चले जाने आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दें। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जितना अपने घर में बारी–बारी से आने–जाने वाले अंधेरे उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना। वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते हैं, जिसे सार्थकता देने के लिये ही हमें सुख दुख देते हैं, उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिये ही मेरे जीवन को घेरे हुए है।

अथवा

कुछ देर जीजी चुप, फिर मठरी मेरे मुँह में डालती हुई बोली, ''देख बिना त्याग के दान नहीं होता। अगर तेरे पास लाखों–करोड़ों रुपये है और उसमें से तू दो–चार रुपये किसी को दे दे तो यह क्या त्याग हुआ। त्याग तो यह होता है कि जो चीज तेरे पास भी कम है, जिसकी तुझको भी जरूरत है तो अपनी जरूरत पीछे रख कर दूसरे के कल्याण के लिए उसे दे तो त्याग तो वह होता है, दान तो वह होता है, उसी का फल मिलता है।''

उत्तर– सप्रसंग– उपर्युक्त गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग–2 के अध्याय '11 छायावादी लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'भक्तिन' रेखाचित्र से अवतरित है।

प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका ने भक्तिन के माध्यम से स्वामीभक्ति का परिचय दिया है।

व्याख्या– प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से लेखिका कहती है कि मेरे और भक्तिन के बीच सेवक व स्वामी सा संबंध था जैसे स्वामी न तो सेवक का साथ छोड़ता है और न ही सेवक स्वामी का। ऐसा ही स्वभाव था। भक्तिन का क्योंकि जब मेरे को देश के लिए जेल जाने का अवसर आया तो बिना कहे भक्तिन ने अपने कपड़े और मेरे कपड़े एक पोटली में बाँध लिए क्योंकि भक्तिन नहीं चाहती है कि महादेवी दुख भोग और भक्तिन घर पर सुखी रहे यह कैसे संभव हो सकता है इसलिए लेखिका भक्तिन को नौकरानी कहना असंगत सा लगता था। जिस तरह अपने घर में आने वाले उजाला– अँधेरा एक दूसरे के सम्पूरक होते है उसी प्रकार सुख–दुख की घड़ी में महादेवी मेरे हमेशा साथ बनी रही और भक्तिन ने अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व से मेरे जीवन को घेरे रखा।

विशेष – (अ) प्रस्तुत गद्यांश सरल, सहज एवं भावपूर्ण भाषा में लिखा जाता है।
(ब) इस गद्यांश में सेवक और स्वामी के आत्मिक संबंधो का उजागर किया है।

19. अपने विद्यालय के लिये खेलकूद सामग्री क्रय करने हेतु निविदा तैयार कीजिए । **4**

उत्तर– राजकीय विद्यालय,
कोटा, राजस्थान,

क्रमांक – 117
दिनांक – 08 अप्रेल, 2022

निविदा सूचना

विद्यालय की समस्त भौतिक सुविधाओं के देखते हुए विद्यालय में खेल सामग्री का अभाव बना हुआ है और कुछ समय बाद राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिता का विद्यालय की ओर नामांकन भरा जा चुका है।

अतः दिनांक 15 अप्रेल, 2022 से पूर्व नयी खेल सामग्री खरीदकर छात्रों को उपलब्ध करवाये।

विवरण – 1. दो बेट
2. एक दर्जन बॉल

आपका आज्ञाकारी
शिष्य

अथवा

सचिव मा. शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर की ओर से दसवीं और बारहवीं की बोर्ड परीक्षा तिथि परिवर्तन की विज्ञप्ति तैयार कीजिए।

20. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए: (शब्द–सीमा 300 शब्द) **5**

(1) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए इंटरनेट की आवश्यकता।

(2) असम और राजस्थानी संस्कृति समन्वय और विभिन्नताएँ।

(3) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं।

(4) बढ़ती महँगाई का जीवन पर प्रभाव।

उत्तर– बेटी, बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान का तात्पर्य– केवल बेटियों को बचाना और पढ़ाना ही नहीं बल्कि सदियों से चली आ रही धार्मिक प्रथाओं एवं गलत मानसिक विचारधारा में परिवर्तन लाना भी है। महिलाओं के शिक्षित होने से वे अपने ऊपर होने वाले उत्पीड़न का विरोध कर सकती है और अपने अधिकार की माँग कर सकती है।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान का उद्देश्य–

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत में निरंतर घट रही महिलाओं की जनसंख्या के अनुपात को संतुलित करने के साथ–साथ उनके हक एवं अधिकारों की पूर्ति करना भी है। भारतीय संविधान द्वारा महिलाओं को प्रदत्त अधिकार जैसे शिक्षा का अधिकार, समान सेवा का अधिकार तथा सम्मान के साथ जीने के अधिकार को सुनिश्चित करता है।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना सन् 2015 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासो तथा महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आरंभ की गई। हालाकि इस योजना की शुरुआत हरियाना प्रदेश से हुई पर आज भारत के प्रत्येक प्रदेश में इसका पालन पूरी इमानदारी का साथ किया जा रहा है। और इस योजना का सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है। आज इस योजना के तहत बेटियों को एक नई प्रतिभा का विकास एवं लोगों के अंदर बेटियों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच का संचार बहुत तेजी से हो रहा है।

इस योजना के तहत सबसे पहले सम्पूर्ण भारत में पूर्व गर्भाधान और प्रसव पूर्व निदान तकनीक अधिनियम, 1994 को लागू किया गया है। कोई भी ऐसा करते पकड़ा गया तो उसके लिए कड़े दंड के प्रावधान हैं। साथ ही साथ यदि कोई चिकित्सक भ्रण लिंग परीक्षण करते या भ्रण–हत्या का दोषी पाया गया, तो उसे अपने लाइसेंस रद्द के साथ–साथ भयंकर परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। इसके लिए कानूनी कार्यवाही के आदेश हैं।

उपसंहार–

भारत सरकार एवं प्रत्येक राज्य की सरकार के अथक प्रयास से आज देश में जन्म लेने वाली बेटियों की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा सुनिश्चित हो पा रही है। आज बहुत सारी निजी संस्था, चैरिटेबल ट्रस्ट तथा व्यक्तिगत रूप से लोग एक दूसरे को जागरूक करने का प्रयास कर रहे है। इस मुहिम का प्रभाव देश के प्रत्येक स्कूलों, सरकारी एवं गैर सरकारी कार्यालयों, रक्षा तथा क्रिया के क्षेत्र में पुरुषों के अनुपात में देखने को मिल रहा है।

बढ़ती महँगाई का जीवन पर प्रभाव–

प्रस्तावना–

महंगाई देश की सबसे बड़ी समस्यायों में से एक है। जब से हमारे देश को आजादी मिली, तब से लेकर आज तक लगातार वस्तुओ की कीमतों में वृद्धि देखी गई है। हमारे दैनिक जीवन की उपयोगी वस्तुओं की माने तो उनमे 150 से 250 गुना तक की कीमतों में वृद्धि हो चुकी है।

आज के समय में देश एक ऐसे कगार पर खड़ा है, जहाँ एक ओर जनसंख्या वृद्धि की समस्या देश झेल रहा है और वही दूसरी ओर महँगाई। आजाद होने के बाद से लेकर वर्तमान समय की बात करें तो देश में जनसंख्या तीन गुनी हो चुकी है। जनसंख्या की इस कदर वृद्धि होने से महंगाई की वृद्धि होना जायज है।

पहले हमारे देश में गरीबी की रेखा के नीचे आने वाले लोगो की संख्या अधिक थी। लेकिन आज के दृश्य की बात करे तो आज ऐसे लोगो की संख्या कम है। हालांकि लोगो को भुखमरी का शिकार नही होना पड़ रहा है। आज सभी को अन्न और जल की पूर्ति हो रही है।

जब वस्तुओ की माँग बढ़ेगी तो स्वाभाविक रूप से मंहगाई भी बढ़ेगी। भारत जैसे उन्नतशील देश में एक बहुत बड़ा व्यय का जिक्र करे तो वह खनिज संसाधन पर होता है, यानी की पेट्रोल पर। इस खर्च को नियंत्रित करने की दिशा में अभी तक कोई सफलता नहीं मिली है। यही वजह है पेट्रोल के दाम में वृद्धि होती रहती है। पेट्रोल के दाम बढ़ने से अन्य चीजे भी महंगी होना जायज सी बात है।

महंगाई बढ़ने का कारण–

बाजार में महंगाई के बढ़ने और घटने दोनो के पीछे अहम वजह मांग और आपूर्ति होती है। मांग व्यक्ति की उपरोक्त वस्तु की खरीदने की क्षमता यानी की उसके मौजूदा बजट पर निर्भर करती है। वही उसके द्वारा जमा की गई राशि उसके खर्च पर निर्भर करती है कि उसकी कुल आय कितनी है, वह कितना खर्च करने में सक्षम है।

यदि व्यक्ति के पास अधिक पैसे है, तो वो ऐसे में अधिक चीजों की खरीददारी करेगा और अधिक खरीदारी करने से वस्तुओ की मांग में वृद्धि होगी। ऐसे में उत्पाद की कमी होने के कारण उसकी कीमत बढ़ना लाजमी है। महंगाई बढ़ने के पीछे वैसे तो कई जायज वजह है, जिनमे से एक वजह भ्रष्टाचार को भी माना गया है। वर्तमान समय में कुछ इसी स्थिति बन गई है, जिसमे अमीर और अमीर बनता जा रहा है और गरीब का जीवन गरीबी में ही कट जाता है।

किसानों की कमजोर आर्थिक स्थिति भी महंगाई लाने के पीछे जिम्मेदार मानी गई है। प्राकृतिक आपदा के चलते कभी कभी फसलें बरबाद हो जाती है। ऐसे में किसान भाईयो को तो बड़ा नुकसान होता ही है, साथ ही में देश की अर्थव्यवस्था शिथिल पड़ जाती है। वर्तमान समय में हमारे देश में खाद्यान्न की समस्या तो नही है, लेकिन कालाबाजारी की समस्या ने देश को जकड़ लिया है। जिसके चलते अनाज की कमी को झूठ में ही दिखाया जाता है।

कालाबाजारी महंगाई बढ़ने की अहम वजह–

मंहगाई बढ़ने की कई वजह हो सकती है और उन्ही वजहों में से एक वजह कालाबाजारी भी है। बड़े बड़े व्यापारी और पूंजीपति मौके का फायदा उठाकर पैसे की आड़ में जरूरी चीजों का संग्रहण कर लेते है। नतीजा बाजार से आवश्यक चीजे मिलना बंद हो जाती है। जैसे ही इसकी आपूर्ति होती है, लोग चीजों को दाम बढ़ा कर बेचना शुरू कर देते है। इसी को आम भाषा में कालाबाजारी के नाम से जानते है, जोकि पैसे कमाने के लिए लालची लोग करते है।

महंगाई का आम जनता पर प्रभाव–

महंगाई बढ़ जाने से माध्यम और निम्न वर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित होता है। पेट्रोल के दाम हो या गैस सिलेंडर के दाम, इनके बढ़ जाने से उनका आर्थिक संतुलन बिगड़ जाता है। ऐसे में लोग अपनी जरूरतों को काटकर घर चलाने का प्रयास करते है। जिनमें उनको अपने बच्चो की पढ़ाई तक के खर्च को कम करना पड़ता है।

बढ़ती मंहगाई पर लगाम लगाने के उपाय–

दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं के बढ़ती महंगाई पर लगाम लगाने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाना चाहिए। इस दिशा में सरकार को चाहिए की लगातार मूल्य–नियंत्रण पर नजर रखे। ऐसा करने से कालाबाजारी पर कुछ हद तक लगाम लगाई जा सकती है। लेकिन इस दौरान आम लोगो को चाहिए की वह संयम रखे।

महंगाई का प्रभाव–

बढ़ती हुई महंगाई से निम्न और मध्यम स्तर के लोग काफी प्रभावित होते है। जैसे की खाने पीने की चीजों और ईंधन में अचानक से बढ़ोतरी कर दी जाती है, जिससे लोगो का आर्थिक बजट गड़बड़ा जाता है। लोग सरकार को दोष देने लगते है। स्टील और सीमेंट जैसी उपयोगी चीजों की महंगाई, इनपुट के रूप में इनका उपयोग करने वाले उद्योगों को तगड़ा झटका देती है। वही इसका असर सिर्फ आम जनता को पड़ता है, इसके निर्माता हमेशा फायदे में रहते है।

महंगाई की समस्या से निबटने के लिए व्यावहारिक समाधान–

महंगाई से बचने के लिए उपभोक्ता और सरकार दोनों को आगे आना चाहिए। उनके बीच अच्छे गठबंधन से महंगाई पर लगाम लगाई जा सकती है। सरकार को समय–समय पर जाँच करते रहना चाहिए कि कहीं कोई व्यापारी कालाबाजारी तो नहीं कर रहा है। यदि कर रहा है तो उसके खिलाफ सख्त कार्यवाही करनी चाहिए।

वहीं आम जनता को सहयोग के रूप में सामान खरीदने के दौरान जागरूक होना चाहिए। उसे यह जानकारी होनी चाहिए की वस्तु का क्या मूल्य है और एक ग्राहक होने के नाते उसे क्या क्या अधिकार दिए गए। यदि कोई दुकानदार किसी वस्तु के मूल्य से अधिक दाम पर वस्तु को बेच रहा है, तो उसके खिलाफ शिकायत दर्ज करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त सरकार को खाद्य पदार्थों और रोजमर्रा की वस्तुओं के दामों पर पैनी नजर बनाए रखनी चाहिए।

महंगाई को रोकने के लिए आम जनता को चाहिए की वे सिर्फ आवश्यक वस्तुएँ की खरीददारी करे। ऐसा करने से महंगाई की समस्या का समाधान किया जा सकता है। यदि हम अपनी जरूरत की वस्तु खरीदने के लिए बाजार जाते है, तो हमे उपरोक्त वस्तु को खरीदने से बचना चाहिए। ऐसा करने से वस्तुओं के मूल्य में अपने आप गिरावट आती है।

निष्कर्ष

देश को उन्नत करने के लिए हमे महंगाई पर लगाम कसने की जरूरत है। महंगाई की समस्या का निदान निकलते ही देश में भुखमरी की समस्या का अंत अपने आप हो जायेगा। महंगाई के होते हुए कोई भी देश विकास नहीं कर सकता। मंहगाई को नियंत्रित करने के लिए हमे खुद भी छोटे मोटे प्रयास करने चाहिए। इसके साथ सरकार को भी कालाबाजारी को खत्म करने के लिए सख्त नियम बनाने चाहिए।